बड़ों का सम्मान, छोटों पर दया

मुहम्मद अज़हर मदनी

उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स मुझ में से नहीं है जो हमारे बड़ों का सम्मान न करे और हमारे छोटों पर दया व करूणा न करे और हमारे आलिम (ज्ञानी) की कद्र न करे'' (मुस्नद अहमद, तबरानी, हाकिम, शैख अलबानी रह० ने इस हदीस को हसन कहा है, सहीहुत तरग़ीब वत तरहीब १०१)

यह हदीस तीन बिन्दुओं, बातों और उपदेशों पर आधारित है (१) बड़ों का सम्मान करना (२) छोटों पर दया एवं करूणा का व्यवहार करना ३. ज्ञानियों का मान-सम्मान और उनकी मान मर्यादा का ख्याल रखना।

बड़ों के सम्मान का मतलब यह है कि उनके नेक कामों और बातों को गौर से सुना और देखा जाये और फिर इसके अनुसार अपने अन्दर भी इसी तरह का बदलाव लाया जाए, अपने बड़ों का सम्मान यह भी है कि भरी मज्लिस में उनसे शिष्टाचार से बात चीत की जाए और उनके सामने कोई ऐसा वाक्य न बोला जाये जिससे उनका अपमान होता हो। जहां तक अपने से बड़ों के सम्मान की बात है तो आज हमारे समाज से इसका अभाव होता जा रहा है इससे हमें बचने की ज़रूरत है।

अपने से छोटों पर दया व करूणा का मतलब यह है कि उनके स्वभाव का ख्याल रखते हुए कोई बात कही जाए, ऐसे वाक्यों के स्तेमाल से परहेज करना चाहिए जिससे उनके अन्दर हीनता की भावना पैदा हो, अकारण डाँट डपट न की जाए, समझाने के लिये नम्रता का रास्ता अपनाया जाए। प्रयास यही रहे कि अच्छे कामों के लिये उन्हें प्रेरित किया जाये और नेक कामों में उनका प्रोत्साहन किया जाये और प्रशिक्षण पर भरपूर ध्यान दिया जाए।

ज्ञानी के सम्मान और मान मर्यादा का ख्याल रखना बहुत ज़रूरी है क्योंकि ओलमा ही हमें दीन की बातों से अवगत कराते हैं और जीवन के तमाम चरणों में हमें दीन की शिक्षाओं की रोश्नी में मार्गदर्शन करते हैं। ओलमा का भी यह कर्तव्य है कि वह भी कोई ऐसा काम न करें जिससे लोगों को कुछ बोलने का मौक़ा मिले क्योंकि उन्हें लोगों के सामने इस्लाम का आदर्श पेश करना है। ज्ञानी का सम्मान उसके व्यवहार से सशर्त है इसलिये उनका व्यवहार इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार होना चाहिए और वह समाज में लोगों के साथ शख्स बन कर रहने के साथ शख्सियत बनकर भी रहें। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह सबको बड़ों का सम्मान, छोटों पर दया और ज्ञानियों की कद्र करने की क्षमता प्रदान करे। आमीन

मासिक

इसलाहे समाज

सितंबर 2022 वर्ष 33 अंक 09

सफरुल मुज़फ्फर 1444 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	बड़ों का सम्मान, छोटों पर दया	2
2.	भलाई और बुराई की पहचान	4
3.	पवित्र कुरआन की शिक्षाओं पर अमल करें	6
4.	परलय के दिन	10
5.	मध्य मार्ग	11
6.	अपील	16
7.	ईमान और सत्कर्म	17
8.	जुवा हराम है	18
9.	हज़रत मुहम्मद स० की शिक्षाएं ...	20
10.	पाठकगण ध्यान दें	24
11.	एकान्त के पाप	25
12.	प्रेस रिलीज़	26
13.	अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन)	27
14.	कलैन्डर 2023	28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

भलाई और बुराई की पहचान

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

इन्सान नफा नुक़्सान जानने का पाबन्द है। भलाई और बुराई का जानना पहचानना उसके जीवन के कर्तव्यों और उसके महत्वपूर्ण एवं आवश्यक कर्मों में से है ताकि वह अपने जीवन के मक़सद को पा लेने के लिये नफा कमाए और नुकसान व पाप से बचे। भलाई को पहचान करके उसकी प्राप्ति के लिये प्रायासरत और बुराई को जान कर उससे बचे और दूर रहे। मानव जीवन में इसकी अहमियत और ज़रूरत को समझना सबसे बड़ी चीज़ है और इसकी पहचान और इसका ज्ञान प्राप्त करना बहुत बड़ा काम है जो इन्सान पर फर्ज़ है वर्ना भला और बुरा न मालूम होने, सत्य और असत्य के घुल मिल जाने से और भले और बुरे में अन्तर न होने से इन्सान अंधेरी रात के यात्री की तरह हो जाता है जिसको किसी भी दिशा और गंतव्य का पता न हो, ऐसा इन्सान कदापि अपने गंतव्य को नहीं पहुंच सकता बल्कि हो सकता है कि वह इससे और ज़्यादा दूर होता चला जाए और हिलाकत उसका मुकददर ठेहरे।

जीवन के हर मैदान में और छोटे बड़े मामलात में भले बुरे की पहचान और इसमें अन्तर करना महत्वपूर्ण है जिसे ध्यान में रखना और इसके परिप्रेक्ष्य में अमल करना इन्सान पर फर्ज़ है। इसी लिये अल्लाह तआला ने नेकी बुराई, नफा नुकसान, पाप, पुण्य, अत्याचार व इन्साफ, नेकी और बुराई, जैसी बातों का पवित्र कुरआन और हदीस में उल्लेख करके स्पष्ट कर दिया है कि जिस तरह नेकियों और भलाई के कामों में जुट जाना इन्सान के जीवन का कर्तव्य, जिम्मेदारी और मानवता है इसी तरह हराम और बुराई से बचना भी उस के लिये आवश्यक है।

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''हमने दिखा दिये उसको (भलाई और बुराई) के दोनों रास्ते'' (सूरे बलद-१०)

दूसरी जगह फरमायाः ''हमने उसे राह दिखाई अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने चाहे नाशुकरा'' (सूरे इन्सान-३)

फरमायाः ''नेकी और बुराई बराबर नहीं हो सकती (बल्कि इनमें बड़ा अन्तर है) बुराई को बड़ी भलाई से दफा करो'' (सूरे फुस्सिलत-३४)

इसी तरफ फरमायाः

''और जिसने कण भर नेकी की होगी वह उसे देख लेगा और जिसने कण भर बुराई की होगी वह उसे देख लेगा'' (सूरे जिलज़ाल-७,८)

कुरआन में फरमायाः ''नेकी और परहेज़ागरी में एक दूसरे का सहयोग करते रहो और पाप और अत्याचार में मदद न करो'' (सूरे माइदा-२)

फरमायाः ''और दुनिया में इसके बाद कि इसकी दुरूस्ती (सुधाार, इस्लाह) कर दी गई है फसाद मत फैलाओ।'' (सूरे आराफ-५६)

हज़रत हुज़ैफा बिन यमान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि : ''लोग अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास इसलिये जाते थे कि आप से भलाई की बातें मालूम करें मगर मैं आप से बुराई

और फितनों से बचने के लिये बुराइयों के बारे में पूछा करता था। (सहीह मुस्लिम)

इसी लिये अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा किराम रजियल्लाहो अन्हुम को हमेशा नेकी क्या है? इसे समझाते रहते थे, भलाई और बुराई में अन्तर करना सिखाते थे और साधारण से साधारण अप्रिय और हराम बातों से भी रोकते थे।

अपने सहाबा किराम से फरमाते ''एक दूसरे से हसद न करो, एक दूसरे के लिये धोके से कीमतें न बढ़ाओ, एक दूसरे से जलन न रखो और एक दूसरे से मुंह न फेरो'' (सहीह मुस्लिम)

फरमातेः सात हिलाक कर देने वाली चीज़ों से बचो (सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम)

इसी तरह कपटाचार के लक्षण और अन्य हार्दिक रोग और शारीरिक रोगों से बचने का तरीक़ा बताया।

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने मुबारक हाथ से जमीन पर एक लकीर खींची और फरमाया यह अल्लाह का रास्ता है इसके बाद आप ने इस लकीर के दायें बाएं कई लकीरें खींची और फरमाया कि यह विभिन्न रास्ते हैं और इन में से हर रास्ते पर शैतान बैठा हुआ है जो लोगों को इन रास्तों की तरफ (आकर्षक अन्दाज) में बुला रहा है फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुरआन की इस आयत की तिलावत की जिस का अर्थ यह है ''और यह दीन मेरा रास्ता है जो सीधा है इसलिये इस पर चलो और दूसरी राहों पर न चलो कि वह राहें तुम्हें अल्लाह की राह से अलग कर (हटा) देंगी। इसका तुम को अल्लाह ने ताकीदी (सख्त आदेश) दिया है ताकि तुम परहेज़गारी अपनाओ'' (मुस्नद अहमद)

यहाँ मिसाल देकर यह स्पष्ट किया कि सत्य का रास्ता एक ही है जिस पर अग्रसर होकर इन्सान लोक परलोक में कामयाब हो सकता है और इसके अलावा जितने रासते हैं वह इन्सान को दिशाहीन बनाते हैं। बुद्धिमान वही है जो सत्य व असत्य, भलाई और बुराई में अन्तर करके सुधार की राह अपना कर आगे बढ़े, देश और मानवता की सेवा को अपने जीवन का उददेश्य बनाये इसी में सबकी भलाई है।

(प्रेस रिलीज़)

सफ़रुल मुजफ्फर १४४४ का चाँद नज़र नहीं आया

दिल्ली, २८ अगस्त २०२२

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २९ मुहर्रमुल हराम १४४४ हिजरी अर्थात २८ अगस्त २०२२ रविवार को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और सफ़रूल मुजफ्फर के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चांद को देखने की प्रमाणित खबर नहीं मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि दिनाँक २९ अगस्त २०२२ सोमवार के दिन सफ़रूल मुजफ्फर की ३०वीं तारीख होगी।

पवित्र कुरआन की शिक्षाओं पर अमल करें

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी, पटना

आकाशीय ग्रन्थों में पवित्र कुरआन सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली विश्वसनीय किताब है। यह मानवता के नाम अल्लाह का अन्तिम सन्देश है, यह ऐसी किताब है जिस की सरलता और वाग्मिता अभूतपूर्व है जिस की भाषा शैली अत्यंत निराली और महानतापूर्ण है। यह ऐसी किताब है जिसने जमाने के बड़े बड़े पत्थर दिल सूरमाओं को संसार के पालनहार की चौखट पर झुक जाने पर मजबूर कर दिया है यह वह कुंजी है जिससे दिलों के ताले खुलते हैं। यह पवित्र कुरआन ज्ञान का समुद्र, उपदेशों का खज़ाना है, इस कुरआन में आस्थाएं भी हैं और इबादतें भी, मामलात का उल्लेख भी है और नैतिकता व शिष्टाचार भी। इसमें अल्लाह के अधिकारों और बन्दों के आधिकारों का बयान भी। इस में पैगम्बरों का उल्लेख भी है और पैगम्बरों को झुठलाने वालों की दर्दनाक एवं पीड़ादायक दास्तान भी।

इन्सान के दिलों में शान्ति पैदा करने वाली यह किताब अनगिनत खूबियाँ रखती है। यह पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सबसे बड़ा चमत्कार है। यह पिछली आकाशीय किताब की संरक्षक, उनकी पुष्टि करने वाली किताब है। यह पूरे मानव जगत के लिये मार्गदर्शन का स्रोत है जो क्यामत तक बाक़ी रहेगी और समय व स्थान का परिवर्तन का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''बहुत बर्कत वाला है वह अल्लाह जिसने अपने बन्दे पर पवित्र कुरआन उतारा ताकि वह लोगों को आगाह करने वाला बन जाएँ'' (सूरे फुरकान-१)

अल्लाह तआला ने इस किताब के माध्यम से संसार के बड़े बड़े भाषा ज्ञानियों और भाषाविदों को चुनौती दी मगर वह ऐसी किताब नहीं ला सके। कुरआन के कथनानुसार-

''कह दीजिए कि अगर तमाम इन्सान और सब जिन्नात मिल कर इस कुरआन जैसा लाना चाहें तो उन सब से इसके जैसे लाना असंभव है चाहे वह (आपस में) एक दूसरे के मददगार बन जायें। (सूरे इसरा-८८)

इस किताब की एक बड़ी विशेषता यह है कि यह किताब अल्लाह से बन्दों के संबन्ध को जोड़ती और इसे मजबूत बनाती है, अगर आप इस किताब से जुड़े नहीं हैं तो यक़ीन मानें कि अल्लाह से आप का रिश्ता कमज़ोर और आप नुक़ासन और तबाही की राह पर जा रहे हैं। पवित्र कुरआन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अल्लाह ने इस की सुरक्षा की जिममेदारी अपनी किसी स्रष्टि के हवाले नहीं की, संस्था, संगठन और शासन प्रमुख को नहीं दी बाकी स्वयं इस की जिम्मेदारी ली है जैसा कि सूरे हिज्र आयत न. ९ में बयान किया गया है।

यह वह कुरआन है कि जब अपनी अपनी की स्थिति होगी, करीबी

रिश्तेदार भागेंगे, ''इन्सान अपने भाई, मां और बाप से भागेगा'' का दृष्य हो गा, कोई मुआवजा कुबूल नहीं किया जायेगा दोस्ती काम नहीं आएगी, अल्लाह की इजाज़त के लिए किसी को सिफारिश का अधिकार नहीं होगा उस दिन यह कुरआन सिफारिशी बन कर खड़ा होगा। जैसा कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कुरआन पढ़ो! यह परलय के दिन कुरआन पढ़ने वाले के हक में सिफारिश करेगा। (सहीह मुस्लिम) शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया रह० ने जेल में ८० बार कुरआन खतम किया और जब ८१वीं बार पढ़ते-पढ़ते सूरे कमर की इस आयत ५४-५५ पर पहुंच तो निधन हो गया।

यह वह कुरआन है जिस की रोशनी से हम अपनी नाकामी को कामयाबी से बदल सकते हैं। अपनी समस्याओं और कठिनाइयों का समाधान कर सकते हैं और विकास व सफलता की मंजिलें तय कर सकते हैं शर्त यह है कि अपनी जिन्दगी में इसकी शिक्षाओं को व्यवहारिक रूप दें, सीने से लगाये रखें। अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन में पवित्र कुरआन के नूर (रोशनी) होने का अनेकों स्थान पर उल्लेख किया है।

''यक़ीनन तुम्हारे पास हमारा रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) आ चुका जो तुम्हारे सामने अल्लाह की किताब के बारे में अधिकता से ऐसी बातें जाहिर कर रहा है जिन्हें तुम छिपा रहे थे। और बहुत सी बातों से दरगुज़र करता है, तुम्हारे पास अल्लाह तआला की तरफ से नूर और स्पष्ट किताब आ चुकी है जिस के ज़रिये से अल्लाह तआला उन्हें जो अल्लाह की खुशी चाहते हों, सुरक्षा की राहें बतलाता है और अपनी तौफीक़ (क्षमता) से अंधरे से निकाल कर नूर की तरफ लाता है और सत्यमार्ग की तरफ उनका मार्गदर्शन करता है'' (सूरे माइदा-१५-१६)

यह हक़ीक़त है कि मुसलमानों ने जब तक कुरआन को अपने सीने से लगाये रखा, उससे रोशनी हासिल करते रहे, अपने जीवन में कुरआन की शिक्षाओं को लागू किया, इस पर अमल करते रहे। उस वक़्त तक मानव जगत का तत्वाधान किया, कामयाबी ने उनके क़दम चूमे, सम्मान और महानता ने उन्हें अपनी गोद में लिया।

लेकिन जब उनका रिश्ता कुरआन से कमज़ोर हो गया और वह अपनी इच्छाओं का अनुसरण करने लगे तो नाकामियों ने उन्हें घेर लिया उम्मत के उत्थान एवं पतन की इस तारीख पर पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमान सहीह साबित होता है कि अल्लाह तआला इस किताब की वजह से कुछ कौमों को बुलन्दी (कामयाबी) देता है और कुछ कौमों को पतन में धकेल देता है। (सहीह मुस्लिम)

सहाब-ए-किराम इस संसार और मानवीय इतिहास की अजीब व गरीब जमाअत थी उनकी जिन्दगी में बदलाव उस वक़्त पैदा हुआ, जिन्दगी की काया पलट गई जब अल्लाह के पैगम्बर पवित्र कुरआन लेकर आए और इस कुरआन ने अपनी गोद में उनका प्रशिक्षण किया, वह कुरआन से जुड़ गये और इसे अपने दिल से लगा लिया। और उनकी आंखों में अल्लाह से भय के आंसू तैरने लगे। उन्होंने अपने सीने में पवित्र कुरआन को सजाए और निकल पड़े, दुनिया के अध्यापक

बन गये और संसार वालों को न्याय, समता, ईश्परायणता, पवित्रता और मानव सम्मान का पाठ देने लगे और कुरआन से प्रेम और कुरआन की तिलावत ने उन्हें जमाने का विजयी बना दिया।

याद रखें कि पवित्र कुरआन अल्लाह की वाणी है, अल्लाह की महान नेमत है। अगर अल्लाह हमें कोई नेमत न दे केवल कुरआन से मुहब्बत की नेमत दे दे तो यह सब नेमतों पर भारी है दुनिया के किसी धर्म वाले को ऐसी नेमत नहीं मिली लेकिन यह भी हक़ीक़त है कि आज मुसलमान इस नेमत की जितनी नाक़दरी करते हैं, दुनिया वाले अपनी धार्मिक किताबों की नहीं करते, बहुत से मुस्लिम घराने ऐसे हैं जहां से कुरआन की तिलावत की आवाज़ सुनाई नहीं देती, बहुत से मुसलमान ऐसे हैं जो अपनी पूरी ज़िन्दगी में इसकी तिलावत नहीं करते जिसका भयानक परिणाम हमारे सामने है कि आज मुसलमान विभिन्न समस्याओं परेशानियों के शिकार और बेचैन हैं वह सुख ढूंड रहे हैं। इसकी बुनियादी वजह यह है कि हम पवित्र कुरआन से दूर हैं। इन्सान के दिल का कुरआन से गहरा संबन्ध ा है, अल्लाह ने पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल पर कुरआन को नाजिल (अवतरित) किया।

''और बेशक यह (कुरआन) अल्लाह की तरफ से अवतरित किया हुआ है। इसे एमानतदार फरिश्ता लेकर आया है, आप के दिल पर उतरा है कि आप आगाह कर देने वालों में से हो जाएं, साफ-साफ अरबी भाषा में है'' (सूरे शोअ्रा-१९२-१९३)

हार्दिक उलझन और असुख के अलावा हमारे दिलों से अल्लाह का भय ख़तम हो चुका है, हम निडर हो चुके हैं और इसलिये हमारी ज़िन्दगी नाना प्रकार की आशंकाओं में और भय के छांव में गुजर रही है। स्पष्ट सी बात है जब हम अल्लाह से नहीं डरेंगे तो अल्लाह के अलावा से भय हमें सताये गा।

इसलिये अगर हम दिल का सुख चाहते हैं और दिलों में अल्लाह का भय पैदा करना चाहते हैं तो पवित्र कुरआन से जुड़ जाएं और कुरआन की क्षांव में जिन्दगी गुज़ारने की अदा सीखें, मानवीय हृदय पर इस के गहरे प्रभाव पड़ते हैं, यह दिलों में सुख शान्ति और अल्लाह से भय पैदा करने वाली असाधरण किताब है। कुरआन की विभिन्न आयतों में इसकी उपयोगिता का उल्लेख है। ''जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने नेक काम भी किये उनके लिये खुशहाली है और बेहतरीन ठिकाना'' (सूरे रअ्द-२८)

''अल्लाह ने बेहतरीन वाणी अवतरित की है जो ऐसी किताब है कि आपस में मिलती जुलती और बार बार दोहराई हुई आयतों की है, जिससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने पालनहार का भय रखते हैं। आखिर में उनके शरीर और दिल अल्लाह के जिक्र (याद) की तरफ नरम हो जाते हैं''। (सूरे जुमर-२३)

''अगर हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तू देखता कि अल्लाह के भय से वह पस्त होकर टुकड़े-टुकड़े हो जाता हम इन मिसालों को लोगों के सामने बयान करते हैं ताकि वह गौर व फिक्र करें।'' (सूरे हश्र-२१)

यह हक़ीक़त है कि कुरआन के चौमुखी प्रभाव से इन्सान की

बुद्धि आश्चर्यचकित है लेकिन हमारे दिलों पर इसके प्रभाव क्यों नहीं प्रकट होते। इसकी तिलावत से हमारी आंखें क्यों नहीं भीगती, आंसू क्यों नहीं छलकते, हमारे ईमान की ताक़त में बढ़ोतरी क्यों नहीं होती? मुसलमान कुरआन से अपनी श्रद्धा व्यक्त तो करते हैं, इसे चूमते भी और रेश्म के गिलाफ़ में लपेट कर ऊंची जगह रखते हैं, इसकी पवित्रता और मर्यादा के लिये हर प्रकार की कुर्बानी देने को तैयार रहते हैं लेकिन उनका व्यवहारिक रवैया कुरआन से उपेक्षा का होता है, वह इस पर गौर नहीं करते कि कुरआन उन्हें क्या पैगाम दे रहा है और उन्हें कैसा इन्सान बनाना चाहता है, उन्हें ज़िन्दगी कैसी गुज़ारनी चाहिए। अजीब विरोधाभास है मुसलमानों में, यह कुरआन पर मरना जानते हैं लेकिन कुरआन से जीना नहीं जानते। वह यह समझते हैं कि यह मुर्दे के पास और कब्रस्तान में पढ़ी जाने वाली किताब है। इसके तुग़रे दुकान मकान में बरकत हासिल करने के लिये लटकाये जाएं और बस, कुरआन में मानव जीवन में जीवन पैदा करने और मानवीय काफिला को आगे बढ़ाने की क्षमता नहीं है।

याद रखें यह अल्लाह की मजबूत रस्सी है जिसने इसे थाम लिया उसे सीधा रास्ता मिल गया और वह शैतान की गुमराहियों से सुरक्षित हो गया। यह अंधेरे दिलों को उजाला करता है और दुनिया व आखिरत के तमाम चरणों में आप का बेहतरीन रक्षक है।

❑ ❑ ❑

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

परलय के दिन

नौशाद अहमद

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया:''आज के दिन हम उनके मुंह पर मोहरें लगा देंगे और उनके हाथ हम से बातें करेंगे और उनके पांव गवाहियां देंगे, उन कामों की जो वह करते थे'' (सूरे यासीन-६५)

कुरआन की इस आयत में इन्सान को यह चेहावनी दी गई है कि इन्सान इस भ्रम में न रहे कि वह क्यामत के दिन झूठ बोल कर बच जाएगा, जिस पर अपने सांसारिक जीवन में झूठ बोल कर बच जाता था, अपने बचाव के लिये झूठे गवाह तैयार कर लेता था, अपराध की सजा पाने के लिये सुबूतों को मिटा देता था।

कुरआन की इस आयत (वाक्य) में यह भी बताया गया है कि इन्सान पाप का काम चाहे अकेले में करे या लोगों के सामने खुले आम, इन्सान के एक एक कर्म पर अल्लाह आगाह है, वह खबर रखता है कि इन्सान कोई कर्म किस मन से कर रहा है छल देने के लिये या पुण्य कमाने के लिये।

आज साइंस ने कितनी तरक्की पर ली है, एक-एक चीज़ को मापा और तौला जा सकता है, हवा कितनी रफ्तार और तेजी से चल रही है, इसी तरह इन्सान के शरीर में टमपरेचर कितना है, साइन्स का औज़ार इसको भी बता देता है, इसी तरह भूकंप और जलज़ले के बारे में साइंस यह बता देती है कि भूकंम आया था तो उसकी शिददत कितनी थी।

क्यामत के दिन जब इन्सान झूठ बोलेगा तो उसका झूठ दूध और पानी की तरह अलग कर दिया जाएगा, जब इन्सान झूठ बोले गा तो उसके हाथ गवाही देंगे कि इन्सान ने इस हाथ के माध्यम से मुझ से यह गलत काम करवाया था, पैर गवाही देंगे कि उसने मुझसे यह यह पाप करवाये थे, क्यामत के दिन इस चमत्कार को इन्सान अपनी खुली आखों से देखे गा इसलिये कोई भी इस भ्रम में न रहे कि वह पाप करके ईश्वर के प्रकोप से बच जाएगा। अल्लाह ने कुरआन की विभिन्न आयतों में अपना परिचय करवाया है कि वह हर चीज़ का जानने वाला और हर चीज़ के बारे में खबर रखने वाला है।

परलय के प्रकोप से बचने का इन्सान के पास एक ही रास्ता है कि वह दुनिया में जो कुछ कर रहा है, मन में अल्लाह का भय होना चाहिये कि अगर बुरा काम करेंगे तो प्रकोप मिलेगा और नेक काम करेंगे तो पुण्य के पात्र बनेंगे। यही आस्था और सोच इन्सान को सफलता की ओर ले जाती है, और जो लोग स्वार्थ में पड़ कर अपने बुरे कर्मों से दूसरे इन्सानों को नुकसान पहुंचा रहे हैं उनको परलय के दिन इस का परिणाम भुगतना होगा उस दिन न रूपया पैसा काम आयेगा, न सिफारिश काम आयेगी और न ही उस दिन उसका कोई दिफा और बचाव करने वाला हो गा। परलय की अदालत एक ऐसी अदालत होगी जहां पर अपराधी अपने कुकर्मों को स्वीकार करता दुआ चला जायेगा, अपराधी के खिलाफ उसके अंग गवाही देंगे। इसलिये हमें ऐसे दिन के अज़ाब से बचने की तैयारी करनी चाहिये जहां कोई भी किसी के काम नहीं आयेगा केवल उसका अच्छा कर्म काम आये गा बाकी चीज़ें धरी की धरी रह जायेंगी।

मध्य-मार्ग

प्रो० डा० मुहम्मद जिाउर्रहमान आज़मी मदीना मुनव्वरा

'मध्यम' शब्द अरबी शब्द 'वस्त' का अनुवाद है, जिसका एक अर्थ उत्तम भी आता है और उत्तम में भी 'मध्यम' का अर्थ पाया जाता है। इसलिए कहा गया कि तुम एक मध्यम अर्थात उत्तम समुदाय हो।

इसी प्रकार हमने तुम्हें बीच का एक उत्तम समुदाय बनाया, ताकि तुम सारे मनुष्यों पर गवाह हो, और रसूल तुमपर गवाह हो। (कुरआन, सूरा-२, अल बकरा, आयत १४३)

इस्लाम की असंख्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह भी है कि यह मध्यमार्ग धर्म है।

इस्लाम से पूर्व अहले किताब, विशेषकर ईसाइयों ने धर्म में विभिन्न प्रकार के विचारों को दाखिल कर दिया था और फिर उसपर अमल करते हुए अतिक्रमण कर बैठे जिसकी ओर संकेत करके कुरआन में कहा गया है।

''कह दो, ऐ किताब वालो! अपने धर्म में नाहक़ हद से न बढ़ जाओ। और उन लोगों की इच्छाओं का पालन न करो जो इससे पहले स्वयं पथभ्रष्ट हुए, और बहुतों को पथभ्रष्ट किया, और सीधे मार्ग से भटक गए''। (सूरा-५, अल माइदा आयत७७)

ऐ किताब वालो! अपने धर्म में हद से न बढ़ो, और अल्लाह के बारे में सत्य के सिवा कुछ न कहो। मसीह, मरयम का पुत्र, इसके सिवा कुछ नहीं कि अल्लाह का रसूल और एक कलमा है, जिसे उसने मरयम की ओर डाल दिया, और उसकी ओर से एक आत्मा है। तो तुम अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ, और यह न कहो कि तीन हैं। इससे रूक जाओ तो तुम्हारे लिए अच्छा है। अल्लाह तो केवल अकेला इलाह (पूज्य) है। (सूरा-४, अन-निसा, आयत-१७१)

यहां कलमा से अभिप्राय अरबी शब्द ''कुन'' है जिसके द्वारा अल्लाह ने इस पूरी कायनात की सृष्टि की। कुन का अर्थ है हो जा। अल्लाह को यह शक्ति प्राप्त है कि वह किसी काम के बारे में कहता है ''कुन'' (हो जा) तो काम तुरन्त हो जाता है। आत्मा से अभिप्रेत वह फूंक है जिसे जिबरील ने अल्लाह के आदेश से मरयम की ओर फूंका। यहीं से धोखा खाकर ईसाइयों ने मसीह को अल्लाह का बेटा बना दिया, जबकि इंजीलों में जो बाप और बेटे के विषय में आया है वह वास्तव में अल्लाह और बन्दे के आपस के सम्बन्ध की उपमा है। न कि वास्तव में बाप के वीर्य से बेटे के पैदा होने के अर्थ में। अल्लाह के विषय में प्राचीन काल से ही लोग अतिशयोक्ति और अतिक्रमण का शिकार हैं। कोई कहता था कि अल्लाह निर्गुण है। न वह सुनता है न देखता है, न चलता है न बोलता है, न ऊपर है न नीचे

है, न आगे है न पीछे है, न दाएं है न बाएं है। वह तो एक काल्पनिक शक्ति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। और किसी ने उसे तीन भागों में बांट दिया और कहा कि वह तीन में एक है, और एक में तीन। और किसी ने उसके गुणों के आधार पर उसे अलग अलग माबूद बना डाला इस प्रकार एकेश्वरवाद की शुद्ध अवधारणा ही लुप्त हो गयी। कुरआन चूंकि अल्लाह का अन्तिम धर्मशास्त्र है, इसलिए इसने इन गलत अवध ाारणाओं का विभिन्न प्रकार से खंडन करते हुए तौहीद (एकेश्वरवाद) की सही अवधारणा (अकीदा) प्रस्तुत की।

आप ध्यान पूर्वक केवल सूरा-११२, अल-इख्लास का अध ययन कर लें। जिसमें केवल चार आयतें हैं, तो अल्लाह की महिमा और उसके एकत्व का सही बोध हो जायेगा।

''कह दो अल्लाह तो एक ही है, अल्लाह निरपेक्ष (एवं सर्वाधार) है, न किसी का बाप है, न किसी का बेटा है और न कोई उसके बराबर है''। (सूरा-११२, अल इखलास आयतें १-४)

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि इस्लाम सम्पूर्ण जीवन के लिए संविधान देता है। इसलिए उसकी शिक्षाओं में मध्यमार्गीय पक्ष प्रभावी है।

नबी स० के जीवन-चरित्र में भी इसी मध्यमार्ग की झलक मिलती है। एक सहीह हदीस में आया है कि

जब नबी स० को किन्हीं दो समस्याओं में से एक को ग्रहण करने का अधिकार दिया जाता तो जो सबसे आसान होता आप उसको ग्रहण करते, अगर उसको करने में कोई पाप न होता और अगर पाप होता तो आप स० उससे सर्वाधिक दूर रहने वालों में से होते। नबी ने कभी अपने लिए किसी से बदला नहीं लिया। लेकिन अगर कोई अल्लाह द्वारा निर्धारित सीमाओं को तोड़ता तो आप स० अल्लाह के लिए अवश्य सज़ा देते। (बुखारी ३५६० तथा मुस्लिम २३२७)

एक दूसरी सहीह हदीस में फरमाया

''अल्लाह ने मुझे अध्यापक बनाकर और आसानी पैदा करने वाला बनाकर भेजा है''। (सहीह मुस्लिम १४७८)

जब नबी स० किसी को गवर्नर या अधिकारी बनाकर भेजते तो उसको आसानी पैदा करने का आदेश देते। जैसे अबू-मूसा तथा मुआज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा को यमन भेजते हुए आप स० ने फरमायाः

''आसानी पैदा करो कठोरता नहीं, शुभ सूचनाएं सुनाओ, घृणा न दिलाओ''। (बुखारी ४३४१ तथा मुस्लिम १७३३)

इबादत में मध्यमार्ग अपनाना

अल्लाह ने मनुष्य को अपनी बन्दगी के लिए पैदा किया है कुरआन में है।

''मैंने जिन्नों और इनसानों को इसलिए पैदा किया कि वे केवल मेरी ही बन्दगी करें''। (सूरा ५१. अज़ जारियात आयत ५६)

अर्थात किसी और की बन्दगी के लिए नहीं पैदा किया। यहां इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि अल्लाह की यह इच्छा नैसर्गिक है

कि बन्दों से अपनी इबादत चाहता है। इसका सम्बन्ध बलात (जबरदस्ती) इच्छा से नहीं है, क्योंकि अगर यह बलात इच्छा होती तो उसकी बन्दगी करना तथा उसके आज्ञा पालन के लिए विवश हो जाना पड़ता, जैसे फरिश्तों के विषय में आया है।

''ऐ ईमान वालो! तुम स्वयं अपने को तथा अपने परिवार को उस आग से बचाओ, जिसका ईंधन मनुष्य तथा पत्थर होंगे। जिसपर कठोर हृदयवाले शक्तिशाली फरिश्ते नियुक्त हैं, जो अल्लाह के आदेश की अवहेलना नहीं करते, और उनको जो आदेश दिया जाता है उसका पालन करते हैं''। (सूरा ६६ अत-तहरीम आयत६)

क्योंकि अल्लाह की बलात इच्छा पूरी हो कर रहती है।

''वह आकाशों तथा धरती का सृष्टिकर्ता है। वह जिस कार्य का निर्णय करता है कह देता है, हो जो, वह हो जाता है''। (सूरा-२, बकरा आयत-११७)

परन्तु उसने अपनी इच्छा के पालन में मनुष्य को स्वतंत्रता दी है, और इसी स्वतंत्रता के कारण क़ियामत में उसका हिसाब होगा।

चूंकि मनुष्य को इस संसार का निमार्ण भी करना है, इसलिए अल्लाह ने उससे अपनी बन्दगी अपनी इच्छानुसार चाही, और हद से बढ़ने से मना किया।

''रहा संन्यास, तो उसे उन्होंने स्वयं गढ़ा था। हमने उसे उनके लिए अनिवार्य नहीं किया था, यदि अनिवार्य की थी तो केवल अल्लाह की प्रसन्नता की चाहत। फिर वे उसका निर्वाह न कर सके, जैसा कि उसका निर्वाह करना चाहिए था''। (सूरा ५७ अल हदीस आयत २७)

इसलिए इस्लाम ने जहां दूसरे आदेशों में मध्यमार्ग को अपनाए रखा है, वहीं अल्लाह की इबादत में भी वह उसी को अपनाने का आदेश देता है।

एक सहीह हदीस में आया है।

''तीन व्यक्ति नबी स० के घर आए। उन्होंने नबी स० की इबादत के विषय में पूछा। जो उनको बताया गया उन्होंने उसे बहुत कम समझा और कहा, हम नबी की श्रेणी तक कैसे पहुंच सकते हैं। अल्लाह ने तो आप स० के पिछले और भविष्य में होने वाले सारे गुनाहों को क्षमा कर दिया है फिर उनमें से एक ने कहा, मैं तो सदैव पूरी रात नमाज़ पढ़ूंगा दूसरे ने कहा, मैं सदैव रोज़ा (उपवास) रखूंगा तीसरे ने कहा, मैं स्त्रियों से दूर रहूंगा, कभी विवाह नहीं करूंगा''।

जब नबी स० घर आए और आपको उनकी बातों की सूचना दी गई तो आप ने फरमाया

''क्या तुम लोगों ने ऐसा ऐसा कहा? अल्लाह की क़सम मैं तुममें सबसे अधिक अल्लाह से डरने वाला हूं लेकिन मैं रोज़े (उपवास) भी रखता हूं और छोड़ भी देता हूं। रात में नमाज़ें भी पढ़ता हूं और सोता भी हूं और विवाह भी करता हूं, तो जो मेरे मार्ग से हटेगा वह हममें से नहीं''। (बुखारी, ५०६३ तथा मुस्लिम १४०१)

जीवन व्यवहार में मध्यमार्ग पर चलना

१. खाने-पीने में मध्यमार्ग अपनाना : कुरआन में है

''ऐ आदम की संतान! इबादत

के प्रत्येक अवसर पर अपनी शोभा का वस्त्र धारण करो, और खाओ और पियो, परन्तु हद से आगे न बढ़ो, निस्सन्देह अल्लाह हद से आगे बढने वालों से प्रेम नहीं करता''। (सूरा-७ अल आराफ आयत-३१)

''जब यह पेड़ फलें तो इनका फल खाओ, और फसल की कटाई के दिन इसका हक़ अदा करो। और हद से आगे न बढ़ो, निस्सन्देह वह हद से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता''। (सूरा-६, अल अनआम आयत १४१)

२. दान पुण्य में मध्यमार्ग

''जो खर्च करते हैं तो न हद से बढ़ जाते हैं, और न तंगी से काम लेते हैं। बल्कि दोनों के बीच मध्यमार्ग पर रहते हैं'' (सूरा-२५, अल फुरकान आयत ६७)

अल्लाह के आदेश के अनुसार अल्लाह के मार्ग में खर्च करना उत्तम है, परन्तु हद से बढ़ जाने में असंख्य समस्याएं पैदा हो सकती हैं। इसी की ओर एक दूसरे स्थान पर इस प्रकार कहा गया है।

''अपना हाथ न तो अपनी गरदन से बांध रखो कि किसी को कुछ न दो और न उसे बिलकुल खुला छोड़ दो, जिसके कारण निन्दित और पछताते हुए बैठ जाओ''। (सूरा-१७, बनी इसराईल आयत-२६)

३. बदला लेने में मध्यमार्ग

''बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है, परन्तु जो क्षमा कर दे और समझौता कर ले, तो उसका बदला अल्लाह देगा। निस्संदेह वह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता''। (सूरा ४२, अश-शूरा आयत-४०)

अर्थात अगर किसी पर अत्याचार किया गया हो तो उसको अनुमति है कि उसका बदला ले, परन्तु इसमें हद से नहीं बढ़ना चाहिए, बल्कि मध्यमार्ग अपनाते हुए उसपर जितना अत्याचार किया गया है उतना ही बदला ले, और अगर क्षमा कर दे तो यह बहुत ही अच्छा है। ''यदि तुम बदला लो तो बिलकुल उतना ही जितना तुम्हें कष्ट पहुंचा हो। परन्तु यदि धैर्य रखो तो निश्चय ही धैर्यवानों के लिए ज़्यादा अच्छा है। (सूरा-१६, अन-नहल, आयत-१२६)

अर्थात तुमपर जो अत्याचार हुआ है उसका बदला ले सकते हो, परन्तु उतना ही जितना तुम्हें कष्ट पहुंचाया गया। अगर तुमने उससे अधिक बदला लिया तो तुम अत्याचारी बन जाओगे।

यह प्राचीनकाल के बदलों की ओर संकेत है। जो एक के बदले दस या उससे अधिक लोगों को मारते थे।

४. गैर-मुस्लिमों के साथ मध्यम व्यवहार

इस्लाम शान्ति प्रदान करने वाला धर्म है। इसीलिए अल्लाह ने मुहम्मद स० को रहमतुल्लिल आलमीन (सारे संसार के लिए दयानिधि) बनाकर भेजा। आप स० ने मक्का विजय होने के बाद अपने उन शत्रुओं को भी माफ कर दिया जो आपको कत्ल करने का षड़यंत्र रच रहे थे और जिनके कारण आपको मक्का से हिजरत (देश त्याग) करनी पड़ी। आप ने एक से अधिक अवसरों पर अपने शत्रुओं को क्षमा कर दिया, जिससे आपके जीवन चरित्र को

महानता के रूप को देखा जा सकता है।

कुरआन भी इस बात की पुष्टि करता है कि गैर मुस्लिमों के साथ अच्छा बर्ताव किया जाए।

''जिन लोगों ने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध नहीं किया तथा तुम्हें देश से नहीं निकाला उनके साथ अच्छा व्यवहार करने, और उनके साथ न्याय करने से अल्लाह तुम्हें नहीं रोकता। अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है''। (सूरा ६० अल मुम्तहिना, आयत-८)

यहां तक कि अगर कोई मुसलमान हो जाए और उसके माता-पिता विधर्मी ही रह जाएं तो भी उनके साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश है।

''यदि वे तुझ पर दबाव डालें कि तू किसी को मेरा साझी बना, जिसका तुझे कुछ भी ज्ञान नहीं तो उनका कहना न मानना, और दुनिया में उनके संग अच्छा व्यवहार करना'' (सूरा-३१ लुक़मान आयत-१५)

सार यह कि न तो सारे गैर मुस्लिम हमारे शत्रु हैं, न हम उनके शत्रु हैं, बल्कि वे तो इस्लामी संदेश के प्रथम संबोधित हैं, और हम पर यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि उन तक सही इस्लामी संदेश पहुंचाऐं।

''निसन्देह अल्लाह न्याय और भलाई करने, और नातेदारों को उनका हक़ देने का हुक्म देता है। और निर्लज्जता के कर्मों तथा बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें सदुपदेश देता है, ताकि तुम ध्यान दो''। (सूरा-१६, अन नहल आयत-९०)

इस प्रकार इस्लाम जीवन के हर क्षेत्र में मध्यमार्ग अपनाने का आदेश देता है और इससे इतर मार्ग को अपनाने से कठोरता से मना करता है, ताकि एक ऐसे समाज का निर्माण किया जा सके, जहां मुस्लिम और गैर-मुस्लिम समुदाय के सभी लोग मिल जुलकर जीवन व्यतीत कर सकें, और किसी को किसी से भय न हो।

इसलिए हर मुसलमान पर अनिवार्य है कि इस मध्यमार्ग को अपनाए, ताकि दूसरों के लिए इस्लाम उत्तम आदर्श बन सके।

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम.....

पिता का नाम.....

स्थान.....

पोस्ट आफिस.....

वाया.....

तहसील.....

जिला.....

पिन कोड.....

राज्य का नाम.....

मोबाइन नम्बर.....

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताःअहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र कुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उददेश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के पिरणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्ध ा में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता

असगर अली इमाम महदी सलफी

अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान

ईमान और सत्कर्म

मौलाना एहसान इलाही अहमद मोलवी सलफी

ईमान लाने के बाद सत्कर्म करना ज़रूरी है। जुबान से स्वीकार करना, दिल से पुष्टि करना और अंगों से अमल करने का नाम ईमान है। विश्वसनीय व्याख्याकारों ने ईमान की यही परिभाषा की है। इमाम इब्ने तैमिया रह० आदि का कहना है कि अगर नेक अमल नहीं है तो ईमान संपूर्ण नहीं होगा। अल्लाह ने नबियों और पैगम्बरों को भी नेक अमल करने का हुक्म दिया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''ऐ पैगम्बरो! हलाल चीज़ें खाओ और नेक अमल करो तुम जो कुछ कर रहे हो उसे मैं भली भांति जानता हूं। (अल मूमिन-५१)

पवित्र कुरआन में लगभग ६५ स्थानों पर ईमान का उल्लेख करने के तुरन्त बाद नेक अमल (सत्कर्म) का उल्लेख किया गया है जैसा कि अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है: ''जो ईमान लाये और नेक अमल किया उनको ऐसी जन्नत की शुभसूचना दे दीजिये जिसके नीचे से नहरें जारी हैं'' (सूरे बक़रा-२५)

अल्लाह तआला अपने बन्दों की परीक्षा लेता है कि उसका बन्दा कैसे नेक अमल करता है और उसके पैदा किये जाने का मक़सद क्या है? कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है: ''जिस ने मौत और जिन्दगी को इस लिये पैदा किया कि तुम्हें आजमाए कि तुम में से अच्छे काम कौन करता है और वह प्रभुत्वशाली और मआफ करने वाला है'' (सूरे मुल्क-२)

ईमान की हालत में सत्कर्म करने वालों के लिये दुनिया में सुगम जिन्दगी और आखिरत में बेहतरीन बदले का वादा किया गया है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया: ''जो शख्स नेक अमल करे मर्द हो या औरत लेकिन ईमान वाला हो तो हम निःसन्देह अत्यंत बेहतरीन बदला भी उन्हें अवश्य अवश्य देंगे'' (सूरे नहूल-९७)

कुरआन की इस आयत से यह स्पष्ट हो गया कि सत्कर्म के लिये ईमान का होना शर्त है तभी अल्लाह के यहां स्वीकार्य होगा।

ईमान और सत्कर्म के बाद ऐसे लोगों से अल्लाह, फरिश्ते और तमाम दुनिया वाले मुहब्बत करते हैं। एक हदीस में है पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ''जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम से फरमाता है कि अल्लाह तआला अमुक व्यक्ति से मुहब्बत करता है तुम भी उससे मुहब्बत करो फिर जिब्रईल अलैहिस्सलाम भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं फिर जिब्रईल अलैहिस्सलाम आसमान वालों को आवाज लगाते हैं कि अल्लाह तआला अमुक व्यक्ति से मुहब्बत रखता है इस लिये तुम लोग भी इससे मुहब्बत करो फिर तमाम आस्मान वाले इस से मुहब्बत रखने लगते हैं इसके बाद धरती वाले भी इस सत्कर्म करने वोल व्यक्ति से मुहब्बत करने लगते हैं।'' बुखारी-३२०९)

ईमान और सत्कर्म पापों को प्रयिश्चित करते हैं और मामलात में सुधार का माध्यम बन जाते हैं। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''और जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किये और इस पर भी ईमान लाये जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतारी गई और वास्तव में उनके रब की तरफ से सच्चा (दीन) भी वही है, अल्लाह ने उनके पाप को दूर कर दिया और उनके हाल की इस्लाह कर दी'' (सूरे मुहम्मद-२)

ईमान लाने वालों और सत्कर्म करने वालों को अल्लाह नेक लोगों के साथ रखे गा। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और नेक काम किये उन्हें मैं अपने नेक बन्दों में शुमार कर लूंगा'' (सूरे अन्कबूत-६)

आज हर इंसान अपने आप को नेक मानता है लेकिन अल्लाह के नजदीक उसी वक़्त उसको अच्छा और नेक माना जायेगा जब वह ईमान लोने के बाद अच्छा कर्म करेगा।

ईमान वाले और अच्छे कर्म वाले दुनिया और मरने के बाद वाले जीवन में ख़सारे से सुरक्षित रहेंगे। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ज़माने की क़सम बेशक इन्सान सरतासर (संपूर्ण रूप से) घाटे में है सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाये और नेक अमल किये और जिन्होंने आपस में हक़ की वसियत की और एक दूसरे को सब्र की वसियत की। (सूरे अस्र-१-३)

सहाबा किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम नेक कामों के लिये एक दूसरे को प्रेरित करते थे। सहीह मुस्लिम की एक रिवायत में हैः दाऊद बिन आमिर बिन साद बिन अबी वक़ास ने अपने पिता आमिर से हदीस बयान की कि वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा के पास बैठे हुए थे कि खुबाब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने आ कर कहाः ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर! क्या आप ने नहीं सुना कि अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो क्या कहते हैं? निःसन्देह उन्होंने अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना है जो शख्स जनाज़े के साथ उसके घर से निकला और उसकी जनाज़े की नमाज़ अदा की फिर उसके साथ रहा यहां तक कि उसको दफन कर दिया गया तो उसके लिये दो कीरात का सवाब है हर कीरात उहद पहाड़ के समान है और जिसने उसकी जनाज़े की नमाज़ अदा की और लौट आया उसका सवाब भी उहद पहाड़ जैसा है। यह बात सुन कर हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा ने खुबाब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के पास भेजा ताकि वह उनसे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के कथन के बारे में मालूम करें और फिर वापस आकर उनको बताएँ कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा ने क्या कहा। इस दौरान इब्ने उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा ने मस्जिद की कंकरियों से एक मुटठी भर ली और इन कंकरियों को अपने हाथ में उलटने पलटने लगे यहां तक कि संदेश वाहक उनके पास आ गया उसने कहा कि हज़रत आइशा रज़ियल्लहो तआला अन्हा ने कहा है कि अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने सच कहा है। इस पर इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा ने वह कंकरिया जो उनके हाथ में थीं जमीन पर दे मारा फिर कहा निःसन्देह हमने बहुत से कीरातों (पुण्य) को पाने में कोताही की।

गौर कीजिए कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम एक छोटा सा नेक काम के छूट जाने पर कितना परेशान हो जाते थे।

जुवा हराम है

मौलाना अब्दुल मन्नान सलफी

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''ऐ ईमान वालो! अपने आपस के माल नाजायज़ तरीक़े से मत खाओ'' (सूरे निसाः२९)

कुरआन में दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फरमायाः

''लोग आप से शराब और जुवा के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए इन दोनों में बहुत बड़ा गुनाह है और लोगों को इससे दुनियावी फायदा भी होता है लेकिन इन का गुनाह इनके नफा से बहुत ज़्यादा है।'' (सूरे बक़रा-२१९)

सहाब-ए-किराम इस आयत के उतरने के बाद शराब और जुवा से तुरन्त दूर हो गये थे।

बहुत सी हदीसों में जुवे को अवैध करार दिया गया है। हज़रत बुरैदा बिन अल हसीब असलमी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स चौसर से खेला मानो उसने अपने हाथ सुअर के गोश्त व खून से रंगे।''

अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो चौसर से खेला उसने अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी की।

इमाम सअ्दी रह० फरमाते हैंः कि ऐसी हार जीत जिस में दोनों पक्षों की तरफ से बदला रखा जाए वह जुवा है जैसे चौसर है, शतरंज है या इसी तरह कथनी व करनी में हार जीत का मामला है वह जुवा है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुममें से जिस शख्स ने अल्लाह के अलावा की कसम खाई तो उसे चाहिए कि वह लाइलाहा इल्लल्लाह कहे और जिसने अपने साथी से कहा आओ जुआ खेलें तो उसे (यह कहने पर) सदक़ा करना चाहिए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमायाः अल्लाह ने तुम पर शराब, जुवा और ढोल को हराम करार दिया है।

सभी ओलमा जुवा की अवैधता (हराम होने) पर एकमत हैं अर्थात जुवा के हराम होने पर किसी का मतभेद नहीं है।

जुवा महा पाप है कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''लोग आप से शराब और जुवा के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए इन दोनों में बहुत बड़ा गुनाह है और लोगों को इससे दुनियावी फायदा भी होता है लेकिन इन का गुनाह इनके नफा से बहुत ज़्यादा है।'' (सूरे बक़रा-२१९)

अल्लाह का यह फरमान इस्लामी कानून में जुवे की अवैधता पर स्पष्ट दलील है।

जुवा नुकसान के एतबार से शिर्क और शराब जैसा है अर्थात

जिस तरह शिर्क और शराब इन्सान को नुकसान पहुँचाता है इसी तरह जुवा भी नुकसान पहुचाता है इसी लिये अल्लाह ने शिर्क और शराब के साथ जुवा की हुर्मत का भी कुरआन में एक साथ उल्लेख किया है जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ऐ ईमान वालो! बात यही है कि शराब और जुवा और थान वगैरह और पांसे के तीर यह सब गंदी बातें और शैतान के काम हैं इनसे बिल्कुल अलग रहो ताकि तुम सफलता पाओ।'' (सूरे माइदा-९०)

यहां जुवा का उल्लेख शिर्क के साथ करने का संभवतः मकसद यही है कि जो लोग जुवा को अच्छा समझते हैं वह इसकी संगीनी को समझ जाएँ।

शिर्क, जुवा और शराब को कुरआन में रिज्स कहा गया है और अरबी भाषा में हर गंदी घिनावनी चीज़ जिस से मन नफरत करता है उसे रिज्स कहा जाता है।

कुरआन में जुवा को गंदा और शैतान का काम करार दिया गया है जबकि शैतान इन्सान का सबसे बड़ा दुश्मन है इसलिये इन्सान को शैतान के हथकंडों से दूर रहना अनिवार्य और आवश्यक है। खास तौर से वह काम जिन्हें वह बन्दों को फंसाने के लिये करता है इसमें इन्सान की बर्बादी है इसलिये शैतान के कामों से दूर रहा जाए।

जुवा अल्लाह की याद और नमाज़ से रोकता है जो लोग जुवा खेलते हैं वह अपने बहुमूल्य वक़्त को बर्बाद कर रहे हैं। जुमा और जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने के सवाब से वंचित हो जाते हैं इस तरह उनके रोज़गार के संसाधन सीमित और तंग हो जाते हैं, जुवा खेलने से माल भी बर्बाद होता, उमर भी बर्बाद होती है और सब नफा खतम हो जाता है।

जिस तरह से जुवा से इन्सान का धार्मिक नुक्सान होता है उसी तरह से इससे उसका दुनियावी नुक्सान भी होता है। पवित्र कुरआन ने इसके नुक्सान की तरफ संकेत किया है।

एक जगह पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''शैतान तो यूं चाहता है कि शराब और जुवे के ज़रिये तुम्हारे आपस में दुश्मनी और नफरत व कपट पैदा कर दे और अल्लाह की याद से और नमाज़ से तुम को रोक दे''।

इमाम तबरी रह० फरमाते हैं कि अल्लाह तआला के इस कथन में इस बात का वर्णन है कि तुम्हारे बीच ईमान की वजह से जो एकता, प्यार मुहब्बत और भाईचारा पैदा हो गया है इसे शैतान फिर से मलियामेट करने के चक्कर में रहता है।

देख जाता है कि जुवा खेलने वाला अपनी गाढ़ी कमाई को मिन्टों में गंवा देता है, निराशा से मामला आत्महत्या तक पहुंच जाता है। जुवे के कारण खानदान बिखर जाते हैं, पति पत्नी के बीच में लड़ाई झगड़े और तलाक़ की नौबत आ जाती है, खाता पीता घराना कंगाल हो जाता है, कल तक जो इज्जतदार और हैसियत वाले थे वह अपमानित हो जाते हैं, घर में खाने पीने के लाले पड़ जाते हैं, शादी विवाह की योजना धरी की धरी रह जाती है, कारोबार चौपट हो जाता है, यह सब जुवे की कारिस्तानियां और दुष्परिणाम हैं।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाएँ एवं उपदेश

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मुझ से रसूल स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स का आखिरी कलाम ''लाइलाहा इल्लल्लाह'' हो वह जन्नत में जायेगा। (अबू दाऊद ३११६)

❑ अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने रसूल स०अ०व० को फरमाते हुए सुना कि जिस किसी मुसलमान के मरने पर चालीस ऐसे आदमी जनाज़े की नमाज़ पढ़ा दें जो अल्लाह के साथ शिर्क न करते हों तो अल्लाह तआला उनकी सिफारिश उसके हक़ में कुबूल करता है। (मुस्लिम-६४८)

❑ अबू हुरैरा बयान करते हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमाया जो शख्स किसी के जनाज़े में नमाज़ की अदायगी तक शामिल रहे तो उसे एक कीरात के बराबर सवाब मिलेगा। पूछा गया कि कीरात का क्या अर्थ है तो आप ने फरमायाः दो बड़े पहाड़ अर्थात नमाज़े जनाज़ा और तदफीन तक साथ रहने वाला दो बड़े पहाड़ों के बराबर सवाब लेकर वापस लौटेगा। (सहीहुल बुखारी १३२५, सहीह मुस्लिम ६४५)

❑ हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि आपने फरमाया क्यामत की निशानियों में से है कि इल्म उठा लिया जायेगा, जाहिलियत बढ़ जायेगी और शराब पिया जायेगा ज़िना (व्यभिचार) आम हो जायेगा। (बुखारी-मुस्लिम)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि रसूल स०अ०व० ने महल्लों में मस्जिदें बनाने उन्हें पाक साफ और खुश्बूदार रखने का हुक्म दिया है। (अबू दाऊद)

❑ जिसने अल्लाह की खुशी के लिये मस्जिद बनायी तो अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में वैसा ही घर बनायेगा। (बुखारी-४५०)

❑ पैगम्बर मुहम्मद स० ने फरमायाः जब तुम्हारा गुज़र जन्नत के बागों में से हो तो उसके फल खाओ। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत के बाग कौन से हैं? तो मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि मस्जिदें हैं।

❑ पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः मोमिन की मौत के बाद उसके कर्म और अच्छे कामों से जिसका उसे सवाब मिलता है वह सात हैं। इल्म जो उसने दूसरों को सिखाया और फैलाया २. नेक लड़का ३. कुरआन मजीद, जिसका किसी को इल्मी वारिस बनाया। ४. मस्जिद जिसने बनवायी ५. घर जो मुसाफिरों के लिये बनवाया। ६. नहर ७. सदक़ा जो अपनी जिन्दगी में स्वस्थ होने की हालत में दिया। इन सात कामों का सवाब मौत के

बाद भी इन्सान को मिलता रहता है।

नबी स०अ०व० ने फरमाया कि जब कब्र में सवाल होता है तो काफिर या मुनाफिक यह जवाब देता है हाय हाय मुझे मालूम नहीं मैंने लोगों को एक बात करते हुये सुना तो मैं भी इसी तरह कहता रहा इसके बाद उसे लोहे से मारा जाता है कि वह चीख उठता है उसकी चीख पुकार को इन्सान और जिन्नातों के अलावा हर चीज़ सुनती है अगर इन्सान इस आवाज़ को सुन ले तो बेहोश हो जायेगा।(बुखारी १३८०. १३३८)

❑ अल्लाह के रसूल स०अ०व० ने फरमायाः जुल्म और ज्यादती और रिश्ता नाता तोड़ना यह दोनों ऐसे जुर्म हैं कि अल्लाह तआला आखिरत की सजा के साथ दुनिया ही में इसकी सजा दे देता है। (तिर्मिज़ी २५११, अबू दाऊद ४९०२)

❑ अल्लाह के रसूल स०अ०व० ने फरमाया रिश्ता नाता अर्श से लटका हुआ है और कहता है, जो मुझे मिलाये, अल्लाह उसे अपने साथ मिलाये और मुझे तोड़े अल्लाह उसे अपने से तोड़े। (मुस्लिम २५५५)

❑ अल्लाह के नबी स०अ०व० ने फरमायाः किसी मिस्कीन पर सदक़ा करना केवल सदका है और अगर यही सदका किसी गरीब रिश्तेदार पर किया जाये तो इसकी हैसियत दो गुना हो जाती है एक सदके का सवाब और दूसरे रिश्तेनातेदारी जोड़ने का सवाब। (तिर्मिज़ी ६५८)

❑ अल्लाह के नबी स०अ०व० ने फरमायाः जो शख्स अल्लाह पर और आखिरत पर ईमान रखता हो उसे रिश्ता नाता जोड़े रहना चाहिये।

❑ अल्लाह के नबी स०अ०व० ने फरमायाः रिश्ता नाता जोड़ने से खानदान में मुहब्बत बढ़ती है माल में बढ़ोतरी होती है और उमर में बरकत होती है। (तिर्मिज़ी) नवास बिन समआन रजिअल्लल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन कुरआन, उसके पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वालों को लाया जायेगा उस वक्त सूरे बकरा और आले इमरान उस के आगे आगे होगी। (मुस्लिम ८०५)

मअ्क़िल बिन यसार रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के जमाने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत के समान है। (मुस्लिम २९४८)

नौमान बिन बशीर रज़िल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन सबसे हलका अज़ाब उस जहन्नमी शख्स को होगा जिसके दोनों पांव के तलवों में केवल आग की जूतियां होंगी जिसकी वजह से उसका दिमाग खौलेगा जिस तरह से मिरजल (हांडी) और कुमकुम (बर्तन का नाम) खौलता है। (बुखारी ६५२२ मुस्लिम २१३)

अबू अय्यूब अनसारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः किसी शख्स के लिये यह जाइज नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज्यादा के लिये मुलाकात छोड़े इस तरह कि जब दोनों का सामना हो जाये तो यह भी मुंह फेर ले और वह भी मुंह फेर ले और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम में पहल करे। (बुखारी

६०७७ मुस्लिम २५६०)

उमर बिन अबू सलमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से कहाः ऐ लड़के खाना खाने से पहले बिस्मिल्लाह कहो और अपने दायें हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ। (बुख़ारी ५३७६ मुस्लिम २०२२)

मुगीरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक मेरे ऊपर झूठ बांधना किसी दूसरे पर झूठ बांधने की तरह नहीं है जिस ने मुझ पर जान बूझ कर झूठ बाधां तो उसे अपना ठिकाना जहन्नम मे बना लेना चाहिये। (बुख़ारी १२९१ मुस्लिम ४)

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जहन्नम बराबर कहेगी ''और चाहिये'' लेकिन जब अल्लाह अपने पैर को उसमें रख देगा तो कहेगी बस बस तुम्हारी इज्जत की कसम एक हिस्सा दूसरे हिस्से को खाये जा रहा है (बुख़ारी २८४८, मुस्लिम ६६६१)

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान के लिये अमीर की बात सुनना और उसकी एताअत करना जरूरी है उन चीज़ों में भी जिन्हें वह पसन्द करे और उनमें भी जिन्हें वह नापसन्द करे जब तक उसे मअ्सियत का हुक्म न दिया जाये कि जब उसे मअ्सियत का हुक्म दिया जाये तो न सुनना बाकी रहेगा न एताअत करना। (बुखारी ७१४४, मुस्लिम १८३०)

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः गैब की पांच कुंजियां हैं जिन्हें केवल अल्लाह ही जानता है मां के पेट में क्या है केवल अल्लाह जानता है, आने वाले कल में क्या होगा केवल अल्लाह ही जानता है बारिश कब होगी केवल अल्लाह जानता है किसी की मौत किस जगह होगी अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता है और क्यामत कब काइम होगी सिर्फ अल्लाह जानता है। (बुखारी ७३७९)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि जब आंधी चलती तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहते ''अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका खैरहा व खैरा मा फीहा व खैरा मा उर सिलत बिही व अ जूबिका मिन शर रिहा व शर्रे-मा फीहा व शर्रे-मा उर सिलत बिहि'' (मुस्लिम८९९)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रिश्ता नाता अर्श से लटका हुआ है वह कहता है जो मुझे जोड़ेगा अल्लाह उसको जोड़ेगा और जो मुझे तोड़ेगा उसको अल्लाह भी तोड़ेगा। (बुखारी ५९८९ मुस्लिम २५५५)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने किसी बात पर क़सम खाई फिर कोई दूसरी चीज़ उससे बेहतर देखी तो बेहतर को अंजाम दे और अपनी क़सम का कफ्फारा अदा कर दे। (मुस्लिम १६५०)

अबू मसऊद अनसारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते

हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई मुसलमान अल्लाह का हुक्म मानने के मकसद से अपने बाल बच्चों पर खर्च करता है तो यह उसके लिये सदका (पुण्य) होता है। (बुखारी ५३५१, मुस्लिम १००२)

हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः खरीदने और बेचने वाले जब तक एक दूसरे से अलग न हो जायें उन्हें यह इख्तियार बाकी रहता है अब अगर दोनों ने सच्चाई अपनायी और हर बात साफ साफ बयान किया तो उनके बेचने और खरीदने में बरकत होती है और अगर झूठ बोला और कोई बात छिपायी तो उनकी तिजारत से बरकत खत्म कर दी जाती है। (बुखारी २११० मुस्लिम १५३२)

सअ्द बिन अबू वक़ास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कहते हुये सुना जिसने सुबह सवेरे सात अज़वा खुजूरें खायीं तो उस दिन कोई जहर और जादू असर नहीं करेगा। (बुखारी ५७६९ मुस्लिम २०४७)

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

एकान्त के पाप

डा० मुहम्मद यूसुफ हाफिज़ अबू तलहा

आप एकान्त में अपने अंगों की खामोशी की वजह से धोके में न रहें क्योंकि एक दिन ऐसा आने वाला है कि जिस दिन आप के शरीर के अंग भी गवाही देंगे। जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया है:

''हम आज के दिन उनके मुंह पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हम से बात करेंगे और उनके पांव गवाही देंगे उन कामों की जो वह करते थे'' (सूरे यासीन-६५)

बाज़ सलफ फरमाते हैं कि जब आप गुनाह की हालत में हो और इस बात से डर रहे हों कि कहीं हवा से दरवाज़े का पर्दा न उठ जाए जबकि आप का दिल इस बात से बेचैन नहीं है कि अल्लाह आप को देख रहा है तो आप का ऐसा डर इस गुनाह से ज़्यादा संगीन है (हिलयतुल औलिया १/३२४, अद दाओ वद दवाओ पृष्ठ १२८)

स्वयं को तन्हाई (एकान्त) के पाप से बचाइये खास तौर से एकान्त में परिवार और अन्य लोगों की गैर मौजूदगी में मोबाइल, कम्पयूटर और टेलीवीज़न का स्तेमाल करते हुए अपने आप को बचाइये वर्ना अगर बुरी लत लग गई तो यह बुरी लत आप को अपने धर्म पर स्थिर नहीं रहने देगी अर्थात धीरे-धीरे आप के दीन को दीमक की तरह खा जाएगी। दुनिया से छिप कर अपने रब की कुछ इबादत कीजिए ताकि इसके जरिये अपने आप को गलत इच्छाओं के हमलों से बचा सकें।

अगर आप चाहते हैं कि मौत आने तक सहीह रास्ते पर जमे रहें तो एकान्त में हमेशा ईमान को तरो ताज़ा रखें क्यों कि आप हर वक़्त अल्लाह की निगरानी में हैं।

अल्लामा इब्ने क़ैइम रह० फरमाते हैं: ''एकान्त के पाप गुमराही की खाई में सर के बल गिरने के सबब होते हैं और तन्हाई की इबादत सहीह रास्ते पर चलने के सबब है और बन्दा जितना ज़्यादा तन्हाई को अपने और अल्लाह के दर्मियान सुगम बनाए गा उतना ही अल्लाह तआला कब्र में उसकी तन्हाई को सुगम बनाएगा।''

रही बात क्यामत के दिन की तो इस हदीस को ध्यान से पढ़िये। सौबान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: मैं अपनी उम्मत में से ऐसे लोगों को जानता हूं जो क़्यामत के दिन तहामा के पहाड़ों के बराबर साफ सुथरी नेकियां लेकर आएंगे अल्लाह तआला उनको फिजा में उड़ते हुए कण की तरह बना देगा।

सौबान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल हम से उन लोगों का हाल बयान कीजिए और खोल कर बयान कीजिए ताकि अज्ञानता और न जानने के सबब हम उनमें से न हो जाएं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जान लो कि वह तुम्हारे भाइयों में से हैं और तुम्हारी कौम में से हैं, वह भी रातों में उसी तरह इबादत करते हैं जैसे कि तुम इबादत करते हो लेकिन वह ऐसे हैं कि जब एकान्त में होते हैं तो हराम काम करते हैं'' (इब्ने माजा ४१४५, अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह क़रार दिया है)

(प्रेस रिलीज)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस की उच्च शैक्षणिक संस्था अल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया अहले हदीस कम्पलैक्स में स्वंतंत्रा दिवस समारोह

दिल्ली १६ अगस्त २०२२

आज निःसन्देह हमारे दिल हर्ष और उल्लास के जजबात से परिपूर्ण हैं हम सब हिन्दुस्तानी प्रिय देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में जहाँ कहीं भी हैं पूरे राष्ट्रीय जजबा और जोश व खरोश के साथ अपने अपने तौर पर स्वतंत्रता विदस मना रहे हैं। हमें हक़ भी है कि इस दिन को संकल्प दिवस और धन्यवाद दिवस के तौर पर मनायें और अपने पूर्वजों की आज़ादी की प्राप्ति के लिये अनगिनत जानी व माली कुर्बानियों को याद करें और संकल्प नव करें कि देश, समुदाय के निर्माण, विकास और नेकनामी के लिये हर संभव कुर्बानी पेश करने से भी कभी संकोच नहीं करेंगे और हमारे पूर्वजों ने आज़ाद हिन्दुस्तान के लिये जो सपना देखा था उसको साकार करने के लिये प्रयास करते रहेंगे। इन ख्यालात का इज़हार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर (अध्यक्ष) महोदय मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने किया। आप स्वतंत्रता दिवस के अवसार पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की उच्च शैक्षणिक एवं शैक्षिक संस्था अल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया नई दिल्ली में स्थिति अहले हदीस कम्पलैक्स जामिया नगर ओखला नई दिल्ली में ध्वजा रोपण के बाद क्षात्र, अध यापकगण और श्रोतागण से संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह आजादी बड़ी कुर्बानियों के बाद हमें हासिल हुई है इसलिये इस नेमत की कद्र करें और हर उस कार्य से दूर रहें जिससे आज़ादी की आत्मा आहत होती हो। याद रहे कि हमारे पूर्वजों ने चाहे वह किसी भी मत और विचार धारा से संबन्धित रखते हों सबने मिल कर इस देश को आज़ाद कराया और इसे अपने दिल के खून से सींचा और गंगा जमुनी सभ्यता के आधार पर विकसित किया। आज भी हम एकजुट और मिल कर संगठित होकर इसकी सुरक्षा, दिफा और निर्माण व विकास का हक़ अदा कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि ज़रूरत इस बात की है कि जिस तरह इन स्वतंत्रता सेनानियों ने हिन्दू, मुस्लिम, सिख ईसाई का नारा दिया था और सबने मिल कर अंग्रेज़ों को देश से निकाल देने का काम करके आज़ादी की नेमत से मालामाल हुए थे आज भी हम संकल्प करें कि सब मिल कर एकता व एकजुटता के साथ प्रिय देश को निर्माण व विकास के लिये काम करेंगे और देश की अखण्डता, लोकतंत्र और सम्मान व प्रतिष्ठा के लिये हर तरह की कुर्बानी देंगे। स्वतंत्रत दिवस का यही सन्देश है जो हर घड़ी हमारे दृष्टिगत रहना चाहिए। इस अवसर पर संस्था के अध्यापक, क्षात्र, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कार्यकर्तागण दिल्ली प्रदेश एकाई के पदधारी और एलाक़े की जो महत्वपूर्ण हहिस्तयां मौजूद थीं उनमें मौलाना अब्दुस्सत्तार सलफी, मुफ्ती जमील अहम मदनी, हाजी कमरूददीन, इंजीनियर इलहाक़ अहमद, डा० मुहम्मद शीस इदरीस तैमी, डा० अब्दुल वासे तैमी, मुहम्मद अयाज़ तकी के नाम उल्लेखनीय हैं इस अवसर पर क्षात्रों ने राष्ट्रीय गान पढ़ा।